वर्ष - 4 अंक - 16

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक - विराग शास्त्री, देवलाली

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

परामर्शदाता

पं. अभयकुमार जी शास्त्री, देवलाली
पं. राजेन्द्रकुमार जी जैन, जबलपुर
श्री पवनकुमार जी जैन, अलीगढ़
पं. रमेशचन्द शास्त्री, जयपुर
पं.पीयूष शास्त्री, जयपुर
श्री नरेन्द्र कुमार जैन, जबलपुर

संपादक मंडल

डॉ. योगेशजी जैन, अलीगंज
डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली
पं. अरहंतप्रकाश झांझरी, उज्जैन
श्रीमति स्वर्णलता जैन, अलीगढ़

संपादक
विराग शास्त्री
देवलाली

प्रबंध संपादक
श्रीमति स्वस्ति जैन
देवलाली

प्रकाशकीय संपादक
मनीष जैन 'मंगलम्'
जबलपुर

परमसंरक्षक

श्री अनंतराय ए.सेठ, मुंबई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा

संरक्षक

श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनील भाई जे. शाह भायंदर, मुंबई

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर के माननीय संरक्षकगण

परमसंरक्षक - डॉ. वासंतीबेन शाह मुंबई, श्री आलोक जैन कानपुर, श्री ब्रजलाल जैन, मुंबई
संरक्षक - श्री विनोद जैन जयपुर, श्री रमेशचंद जैन जयपुर, श्री प्रकाशचंद जैन रांची
श्रीमती साधना पांड्या कोलकाता, श्री रणधीर सिंह जैन दिल्ली,
श्री नरेश जैन पन्ना, श्री महेन्द्र बड़जात्या, इंदौर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक आचार्य कुन्द-कुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर (म.प्र.)

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय

चहकती चेतना, बंगला नं. 50, बेलतगांव रास्ता, लाम रोड, पोस्ट देवलाली,
जिला - नासिक, महा.- 422 401 मोबा. : 9373294684, 9423212084
e-mail : chehaktichetana@yahoo.com

आप चहकती चेतना पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1920000000000106 में सदस्यता और सहयोग राशि जमा कर हमें सूचित कर सकते है।

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक, नैतिक एवं जैनधर्म की जानकारी से
परिपूर्ण बाल एवं युवा वर्ग की सम्पूर्ण पत्रिका

धार्मिक त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

सूची	1	दीपावली का त्यौहार	18-19
दीपावली कविता	2	फ्रेच कविता	20
संपादकीय	3	ज्ञान पहेली	21
श्रवणबेलगोला का इतिहास	4	नकली चीजों का बढ़ता व्यापार	22-23
जीवन में अहिंसा कैसे	5	सिगड़ी नहीं मोक्ष की पगड़ी	24
जैन और बौद्ध परंपरा	6-7	लौकी का रस पीने से मृत्यु	25-26
क्रोध का फल/पं. टोडरमलजी	8	समाचार/विचार	27-28
कहानी मान किसका रहा	9	समाचार	29
अब नहीं फेंकूंगी	10-11	पाकिस्तान मे जैन मंदिर के अवशेष	30-31
भक्तामर अंग्रेजी	12	आपके प्रश्न हमारे उत्तर	32
जैसी करनी वैसी भरनी/शुल्क जमा	13	एसएमएस	33
सम्राट सिकंदर और कल्याण मुनि	14-15	जन्म दिन	34
वह स्थान कौन सा है	16	आपके ब्रश से	35
छोटी मगर काम की बातें	17	कॉमिक्स	36

एक प्रति
20/-

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि 'चहकती चेतना' के नाम से ड्राट/एम.ओ./कोर बैंकिंग चैक द्वारा भेज सकते है ।

सदस्यता शुल्क	
तीन वर्ष हेतु	300/-
दस वर्ष हेतु	1,500/-
परम संरक्षक	51,000/-
संरक्षक	21,000/-
परम सहायक	11,000/-
सहायक	5,000/-

कैसा ये त्यौहार

एक दिवस बोले सब प्राणी
अपने साथी संग से
घर से बाहर नहीं निकलना
बचना चाहो मौत से
खटमल, मच्छर, मक्खी कांपे
गाय,बैल, पशु, भैंस भी
कीड़े थर-थर कांप रहे थे
भाग रहे थे सांप भी
कॉकरोच तो रोता फिरता
करे विनय भगवान से
मुझे बचा लो दयानाथ जी
मुझे प्रेम है प्राण से
चेतन भैया पूछे उससे
कहो आज क्या बात है
क्या कोई प्रलय आ गया
या आया यमराज है
कॉकरोच यूं रोता बोला -
चेतन भैया क्या बतलाऊँ
सर पर मौत सवार है
वीर प्रभु निर्वाण महोत्सव
दीवाली त्यौहार है
कॉकरोच तू नहीं जानता
यह तो पर्व महान है
जियो जीने दो कहने वाले
महावीर भगवान हैं
सत्य अहिंसा के उदघोषक
का निर्वाण महान है
निभग्य होकर रहो जगत में
तू इससे अनजान है।
कॉकरोच बोला यूं रोते
नहीं समझते बात यही तो
महावीर की जय जय कहते
फटाखे कितने फोड़ते
फटाखे के जलने से
या उसकी आवाज से
जल जाते या मर जाते हम
भाग रहे यमराज से
हम निर्दोष हैं छोटे प्राणी
जीने का अधिकार है
प्राण नहीं दे सकते तो
मारने का क्या अधिकार हे
जल जाओ अग्नि से थोड़ा भी
दुख कितना तुम पाते हो
हम प्राणी का नहीं मूल्य जो
हमको यूं ही जलाते हो
ध्यान रहे ये बात मेरी सुन
जो तुम फटाखे जलाओगे
काल अनंत तक रोना तुम भी
सुखी कभी न हो पाओगे।

संपादकीय

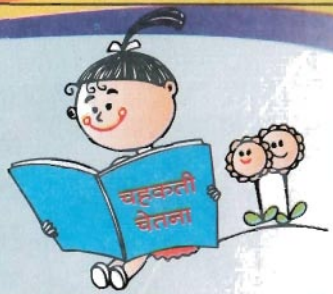

प्यारे बच्चो! आपको स्नेह भरा जय जिनेन्द्र। आप अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे रहे होंगे। साथ ही लगभग हर महीने आने वाले जैन पर्वों को आप मना रहे होंगे। अगस्त माह में मुनि रक्षा का पर्व रक्षाबंधन आपने मुनिराजों को याद करते हुये मनाया होगा। सितम्बर माह में दशलक्षण पर्व आ रहे हैं। संपूर्ण दिगम्बर जैन समाज के लिये दशलक्षण पर्व महामहोत्सव के समान हैं। इन दिनों साधर्मी विशेष आराधना करते हैं। आप भी इन दिनों विशेष रूप से सावधान रहना और जितना बन सके उतना शुद्ध खान-पान करना और धार्मिक गतिविधियों में भाग लेना।

साथ ही 6 नवम्बर को भगवान महावीर का मोक्ष गमन दिन अर्थात् दीपावली भी आ रही है। इस दिन सामान्य तौर पर बच्चे भगवान महावीर और उनके सिद्धांतों को भूलकर फटाखे फोड़कर दीवाली मनाते हैं। सारा विश्व जिन भगवान महावीर को अहिंसा का सबसे बड़ा उपदेशक मानता है उन्हीं के मोक्ष कल्याणक के दिन फटाखे फोड़कर अनंत जीवों की हत्या कर देता है। एक छोटा सा फटाखा या फुलझड़ी जलाना भगवान महावीर का घोर अपमान करना है। हिंसा करने वाले को जिनमत के बाहर कहा है। अतः आनंद के साथ दीपावली मनाना परन्तु हिंसा नहीं करना।

इस अंक में आपके लिये नई-नई जानकारियाँ दी गई हैं। आप स्वयं भी पढ़िये और अपने दोस्तों को भी बताइये।

एक बार फिर से जय जिनेन्द्र।

– आपका विराग

श्रवणबेलगोला का इतिहास

– रामजीत जैन, ग्वालियर

गंगवंश के चामुण्डराय ने आज से लगभग 1000 वर्ष पूर्व श्रवणबेलगोला में विश्व प्रसिद्ध अद्‌भुत सौन्दर्य वाली भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा बनवाई थी। राजा चामुण्डराय के समय लगभग सारे देश में जैन धर्म को महत्व मिलने लगा था।

आचार्य भद्रबाहु ने अपने दस हजार शिष्यों के साथ कटवप्र नामक पर्वत पर तपस्या की, इसी को आज श्रवणबेलगोला कहा जाता है। सम्राट चन्द्रगुप्त ने यहीं पर मुनिदीक्षा ली थी। यहाँ 140 मीटर ऊँची चोटी वाले पर्वत को काटकर भगवान बाहुबली की प्रतिमा को बनाया गया था।

श्रवणबेलगोला का पुराना नाम कडवप्पु अथवा कलप्पु है। आचार्य कुमुदचंद्र द्वारा रचित ग्रन्थ भूवलय के अनुसार लक्ष्मण ने अपने भाई श्री राम के जिनदर्शन की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये इसी पर्वत पर एक तीर छोड़ा जिससे यहाँ पर भगवान के आकार की रेखायें बन गईं। ये रेखायें भगवान बाहुबली के समान दिख रहीं थीं। इन्हीं के दर्शन कर श्री राम ने भोजन किया। उस पत्थर पर रेखा से मूर्ति बनने के कारण उसका नाम कल्लु वप्पु रखा गया।

श्रवणबेलगोला नाम कैसे - श्रवणबेलगोला में चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि नाम के दो पहाड़ियों के बीच एक चौकोर तालाब है। इसका नाम बेलगोल अर्थात् सफेद तालाब था। यहाँ श्रमण अर्थात् मुनिराज विहार करने लगे जिसके कारण इस गांव का नाम श्रमणबेलगोल पड़ा।

श्रवणबेलगोला की भगवान बाहुबली की प्रतिमा आज संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। इसे भारत का प्रथम आश्चर्य घोषित किया गया है।

प्रेरक प्रसंग

जीवन में अहिंसा कैसे एक अहिंसात्मक जीवन शैली

कहीं अनजाने में ही हिंसा से बने पदार्थ प्रयोग नहीं कर रहे। जैन दर्शन के आचार के अनुसार बाजार की बनी प्रत्येक वस्तु मर्यादा की न होने से अभक्ष्य है। फिर भी आप यदि कोई पदार्थ का प्रयोग करें तो आप उसके लेबल को ध्यान से पढें। प्रत्येक खाद्य सामग्री पर उसमें प्रयोग किये जाने वाली सामग्री का नाम लिखा होता है।

सरकार द्वारा मांसाहारी खाद्य पदार्थ पर भूरे रंग का निशान और शाकाहारी पदार्थों पर हरे रंग का निशान लगाना अनिवार्य कर दिया है। जिन पदार्थों पर कोई निशान नहीं होता उन्हें कभी नहीं खाना चाहिये।

बच्चे किटकेट (Kitket) चाकलेट न खायें - यह चॉकलेट UK में बनती है। उसके रेपर पर किसी भी हिसंक प्राणी के मांस मिलाये जाने का उल्लेख नहीं है। परन्तु उसमें बछड़े का रेनेट (आंत का रस) मिलाया जाता है।

पुताई वाले ब्रश - पुताई करते या करवाते समय उन ब्रश का प्रयोग करें जो जानवरों के बाल के नहीं बने होते। आजकल मार्केट में सिंथेटिक ब्रश उपलब्ध हैं।

थोड़ी सी सावधानी रखिये और अहिंसक जीवन अपनाइये।

महान मालवीय

महामना मालवीय को एक विद्वान ने कहा – " मालवीयजी! आप मुझे सौ गालियाँ देकर देख लें, मुझे क्रोध नहीं आयेगा।" तो मालवीयजी ने मुस्कराते हुये कहा कि पण्डितजी! आपके क्रोध की परीक्षा होने के पहले ही मेरी वाणी तो गंदी हो जायेगी, मैं ऐसा क्यों करुँ?

जैन और बौद्ध परंपरा

ऐसा माना जाता कि बौद्ध और जैन धर्म श्रमण संस्कृति की धारायें हैं। जैन धर्म अनादि का काल का है और बौद्ध धर्म का उद्भव बुद्ध के जन्म के बाद भगवान महावीर के समय लगभग 2600 वर्ष पूर्व हुआ। जब बुद्ध को संसार और शरीर से वैराग्य हुआ तो उन्हें दुविधा हुई वे कौनसा मार्ग अंगीकार करें ? बहुत सोच विचारकर उन्होंने उस समय के सबसे प्रतिष्ठित जैन श्रमण परम्परा के साधु पिहितास्रव से मुनि दीक्षा ली और मुनिचर्या का पालन करने लगे। इस बारे में बौद्धों के प्रधान ग्रन्थ 'मज्झिम निकाय' में उल्लेख है कि ''अचलेको होमि, हत्थाप लेखनो, नामिहतं न उद्दिस्सकतं न निमंतणं सादियामि, सो न कुम्भी मुखा परिगण्हामि.....। माहं खुद्दके पाणे विसमगते संघात आयादेस्संति।''

अर्थात् मैं (दीक्षा के बाद) नग्न रहा, मैंने अपने हाथों में आहार लिया, न लाया हुआ भोजन ग्रहण किया, न अपने उद्देश्य से बनाया हुआ भोजन लिया, न निमंत्रण से उनके घर जाकर भोजन किया, न बर्तन में खाया,..... मैंने दिन में एक बार ही भोजन किया। मैंने मस्तक, दाढ़ी व मूंछों के केशलोंच किये। मेरे द्वारा हिंसा न हो इसके प्रति मैं सावधान रहता था।

आगे लिखते हैं – ''सो तत्तो सो सीनो एको मिसनके वने। नग्गो न च आगिं असीनो एक नाप सुतो मुनीति।''

अर्थात् इस तरह कभी गर्मी, कभी ठंडक को सहता हुआ मैं भयानक वन में नग्न रहता था। मैं ठंड से बचने के लिये आग नहीं तापता था। मुनि अवस्था में एकाकी रहकर ध्यान में लीन रहता था।

ये सभी क्रियायें जैन मुनियों की हैं। बुद्ध द्वारा लिखित प्रमाणों से स्पष्ट है कि वे सर्वप्रथम दिगम्बर साधु थे। जब उनसे जैन मुनियों की कठिन चर्या नहीं बनी तो उन्होंने काषाय (गेरूये) वस्त्र धारण कर लिये, पात्र में मांगकर भोजन करना प्रारंभ कर दिया।

महात्मा बुद्ध ने अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर को देखा था और वे उनसे प्रभावित थे। उन्होंने अपने ग्रन्थ दीघ निकाय नामक ग्रंथ में लिखा है –

''निंगठो नातपुत्तो संघी चेव गणाचारियो च नातो यसस्सी तित्थकरो साधु सम्मत्तो बहु जनस्स स्रस्सु चिरपव्वजितो अद्ध गतो वयो अनुप्पता।''

अर्थात् जो निर्ग्रन्थ ज्ञातृपुत्र (भगवान महावीर) संघ के नेता हैं, गणी हैं, गणाचार्य हैं, सर्वज्ञाता हैं, तीर्थंकर हैं, साधुजनों के क्षरा पूज्यनीय हैं, अनुभवशील हैं, बहुत दिनों से साधु चर्या करते हैं और अधिक वय वाले हैं।

मज्झिम निकाय के अंग्रेजी संस्करण में लिखा है

Nattputta is all knowing and seeing possessing an in fimite knowledge.

इन सब बातों से स्पष्ट है कि निर्ग्रन्थ जैन परम्परा का सर्वत्र आदर किया जाता था। मूल स्वरूप नग्न दिगम्बर ही है।

श्री कपूरचंदजी पाटनी (जैन गजट से साभार)

अपना परिचय - पं. टोडरमलजी

पण्डित टोडरमलजी जयपुर के बहुत बड़े विद्वान थे। एक बार एक सज्जन ने पहली बार उनका प्रवचन सुना और उनसे पूछा - महोदय! आपके विचार अति सुन्दर हैं कृपया अपना परिचय दीजिये। उन्होंने उत्तर देते हुये कहा - भाई! मेरा नाम आत्मा है। मैं अपने अमूर्तिक प्रदेशों में रहता हूँ। वहाँ रहते हुये मुझे अनादि काल हो गया है, अनंत काल तक वहीं रहूँगा। मेरा जानने-देखने का व्यापार है। मेरे परिवार में ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य आदि सदस्य हैं। पूछने वाले सज्जन ने पूछा - मैं कुछ समझा नहीं। पण्डितजी बोले - इसे समझने के लिये वीतरागी सन्तों के द्वारा लिखित शास्त्रों का स्वाध्याय कीजिये, आप अपने आप समझ जायेंगे।

प्रेरक प्रसंग क्रोध का फल

याद हुआ रे - पिताजी ने चिल्लाते हुये पूछा।
नहीं पिताजी - लड़के ने डरते हुये जबाब दिया।
चल याद कर '' कोध करना पाप है। कोध का फल बुरा होता है''
कोध पाप है - लड़के ने रुक-रुककर दोहराया।
फिर गलती की ..... कई दिन हो गये, तू एक छोटी लाइन याद नहीं कर पाया। फिल्म के डायलाग एक मिनिट में याद कर लेता है... नालायक कहीं का.....-?'' और पिताजी ने गुस्से में दो चांटे लड़के के गाल पर लगा दिये। लड़का डरकर कोने में चला गया।
दोपहर को जब पिताजी ब्लेड से पेंसिल छील रहे थे तब लड़के ने पास आकर पूछा कि पिताजी पाप करने से क्या होता है पिताजी !
पिताजी बोले - कष्ट होता है और क्या....।
उसी समय पिताजी की ऊंगली ब्लेड से कट गई। लड़का दौड़कर दवा ले आया और दवा लगाते हुये पूछा '' कष्ट हो रहा पिताजी!''
पिताजी ने कहा - हाँ कष्ट तो होगा ही।
तब तो आपको जरूर कोध लग गया है।
वह कैसे?
सुबह आपने कोध किया था ना।
बेटे का उत्तर सुनकर पिताजी मौन रह गये ।

मान किसका रहा ?

एक बार दशानन रावण नित्यालोकपुर से लंका जा रहा था। रास्ते में जाते समय कैलाश पर्वत पर उसका विमान रूक गया। उसने नीचे आकर देखा कि बालि मुनि तपस्या कर रहे हैं। उसने सोचा कि बालि ने बैर के कारण मेरा विमान रोका है, अतः गुस्से में आकर बालि मुनि को अपमानित कर अपनी विद्याओं के बल पर कैलाश पर्वत को हिला दिया। जिससे अनेक पक्षी मर गये तथा भरत चक्रवर्ती के बनवाये जिनमन्दिर भी डांवाडोल होते देखकर बालि मुनि ने मन्दिरों और जीवों के रक्षार्थ अपने पैर के अंगूठे से पर्वत को दबाया जिससे दशानन दबने लगा और वह रोने लगा। यहीं से उसका रावण अर्थात् रोने वाला नाम पड़ गया। हताश होकर उसने बालि मुनि से क्षमा माँगकर जिन मन्दिरों में भक्तिभाव से पूजा की।

इसी प्रकार सीता का हरण करने पर मंदोदरी एवं सभी मंत्रियों ने समझाया था कि सीता को वापस कर दो, किन्तु रावण ने कहा – यदि सीता को वापस करने जाऊँगा तो सभी लोग कायर समझकर मुझे तुच्छ दृष्टि से देखेंगे।

जान से हैं नृपगण सभी वीर मुझे संग्राम से,
यातें लड़ना है मुझे धुन बांधके अब राम से।
जीतकर दूंगा सिया प्यारी जो उनकी प्राण से,
यश होय मेरा विश्व में जीवित रहूं सन्मान से।।

इसका फल हुआ -

एक लख पूत सवा लख नाती।
उस रावण घर दिया न बाती।।

अब नहीं फेंकूंगी

पिंकी अपने भाई-बहनों में सबसे बड़ी थी। दसवीं कक्षा में पढ़ने वाली पिंकी अपनी मम्मी के साथ रसोई के काम भी करवाने लगी थी। माँ रोटी बनाती और पिंकी सब्जी और फल बनाने में माँ का सहयोग करती। उसे काम करने में बहुत मजा आता था। सब्जी और फल का छिलके पोलिथीन में रखकर बाहर फेंक देती। एक दिन माँ ने उसे पोलिथिन में कचरा रखकर फेंकते हुये देखा तो उन्होंने मना किया और कहा देखो पिंकी! तुम पोलिथिन में कचरा मत फेंका करो। हो सकता है कि कोई गाय-भैंस पोलिथिन खा ले और उसे प्रॉब्लम हो जाये। ''मम्मी! आप भी कैसी बातें करती हो ? सभी पशु बहुत समझदार होते हैं वे पहले पोलिथिन फाड़ते हैं बाद में अपने काम की चीज खा लेते हैं और मम्मी! पोलिथिन में कचरा फेंकने से सुविधा भी है इससे कचरा यहाँ-वहाँ नहीं बिखरता।'' पिंकी ने बुद्धिमानी दिखाते हुये कहा।

''पिंकी! भले ही पशु समझदार होते हैं परन्तु इतने भी समझदार नहीं कि उन्हें पता हो कि पोलिथिन पेट में जाने से नुकसान होगा ।'' - मम्मी ने फिर समझाते हुये कहा।

''मम्मी! आप भी प्रवचन देने लगीं। छोड़ो ना इस बात को।'' पिंकी ने लापरवाही से कहा।

पिंकी ने अपनी आदत नहीं छोड़ी और प्रतिदिन पोलिथिन में ही कचरा फेंकती रही।

एक दिन जब वह स्कूल से लौट रही थी तो उसने देखा कि उसके

घर के पास ही कुछ लोगों की भीड़ लगी हुई थी। उसने एक बच्चे से पूछा कि ''यहाँ इतनी भीड़ क्यों लगी हुई है?'' उस बच्चे ने बताया ''एक गाय मर गई है तो म्युनिसीपालिटी वाले उसे उठाकर ले जा रहे हैं।''

पिंकी पास में एक दुकान के सामने खड़ी होकर देखने लगी। दुकान वाला अपने ग्राहक से कह रहा था कि ''इन महिलाओं को पता नहीं कब अक्ल आयेगी ? पालिथिन में कचरा फेंकती हैं। आखिर एक गाय मर गई ना।''

पिंकी ने यह बात सुनी तो उसे मम्मी की बातें याद आने लगीं। उसने दूर से देखा कि गाय के मुंह से प्लास्टिक पोलिथिन के टुकड़े निकल रहे थे। दुकान वाला कहे जा रहा था – ''बेचारी गाय! पोलिथिन गले में ही फंस गई और गाय सांस तक नहीं ले पाई। मर गई।''

पिन्की की आंख से आंसू आने लगे। उसे अपने किये पर पछतावा होने लगा कि वह कभी मम्मी की बात नहीं मानती। पिन्की उदास मन से घर से वापस आ गई। मम्मी ने उसे उदास देखकर पूछा कि ''क्या बात है पिन्की तुम इतनी उदास क्यों हो?''

पिन्की मम्मी से लिपट गई और जोर–जोर से रोने लगी और बोली ''मम्मी! मैं हमेशा आपकी बात मानूँगी। कभी कोई सामान पोलिथिन में नहीं फेकूँगी।''

मम्मी ने सारी घटना सुनकर उसे अपने गले से लगा लिया। देर ही सही पर बात समझ में आ गई थी। पर पिंकी के आंसू लगातार बहे जा रहे थे।

इससे पूर्व के अंक में भक्तामर स्त्रोत के प्रथम चार छंदों का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया गया था अब आगे ...

Bhakatamer Stotra

5

Even then, thought devoid of sense, I prasise, its for ove's sake,
foeced by love, dose not the dear, Face the tigeri for baby?

6

Source of 'musement, thought, to, to the wise Love claims my attention, Lord,
It's her taste for mangoes in spring, Taht makes cuckoo sing of love.

7

Sins of men, gathred thorught ages, Disappear by thy hymn,
Asthesun-shine scatters at once,Pitch-darkness of moon-less night.

8

with this thought I commen this hymm.By the light of thy virtues.
It will capture earts of the virtues.Drops of dewon louts pearls.

9

What to say of hymm, O'Lord,Men's sing vavish by the name,
Needless, sun rises in heaven,Lotus biossoms by its glimpse.

10

No wonder, if by thy worship,men attain the excellence,
Not rich, who makes his men not rich Ornament of universe,

जैसी करनी वैसी भरनी

पुण्डरीकिणी नगरी के राजा जयद्रथ ने एक हंस को मारकर उसका बच्चा पकड़ लिया था। उन्होंने अगले जन्म में सत्यंधर राजा के पुत्र जीवंधर कुमार के रूप में जन्म लिया। जीवंधर कुमार कुमार के जन्म लेते ही उनके पिता सत्यंधर कुमार को उनके मंत्री काष्ठांगार ने मार डाला और जीवंधर कुमार को 16 वर्ष तक अपनी माता से अलग रहना पड़ा। यह सब उनकी करनी का फल था। जैसी करनी वैसी भरनी।

सदस्य गण ध्यान देवें

1. जिन सदस्यों की सदस्यता अवधि पूर्ण हो गई है कृपया वे अपना शुल्क तुरंत भेज देवें। सदस्यता राशि 300 रू. तीन वर्ष हेतु आप चहकती चेतना के नाम से मनीआर्डर/ ड्राफ्ट भेजें अथवा आप हमारे पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 192000000000106 में जमा करके सूचित करें। मनीआर्डर भेजते समय संदेश के स्थान पर अपना पूरा पता फोन नं. अवश्य लिखें। हमारा पता - चहकती चेतना - बंगला नं. 50, कहान नगर सोसायटी, बेलतगांव रास्ता, लाम रोड, पो. देवलाली जि. नासिक 422401 महा. मो. 9373294684 पर भेजें। चैक मान्य नहीं होंगे। जिन सदस्यों की सदस्यता समाप्त हो गई है उन्हें आगामी अंक नहीं भेजा जायेगा।

2. जिन सदस्यों को चहकती चेतना नहीं मिलती अथवा नियमित रूप से नहीं मिल रही है वे कृपया अपनी शिकायत अवश्य भेजें। हमारे पास कई चहकती चेतना पूरा पता न होने से वापस आ रहीं हैं। साथ सदस्यता हेतु मनीआर्डर से राशि तो प्राप्त हो गई परंतु पता न होने से हम उन्हें चहकती चेतना नहीं भेज पा रहे हैं। कृपया पता अवश्य भेजें।

सम्राट सिकन्दर की कल्याण मुनि से भेंट

सम्राट सिकन्दर ने भारत के जैन साधुओं की त्याग-तपस्या के बारे में बहुत सुना था। अतः उसकी जैन मुनि से मिलने की इच्छा हुई। ईसवी पूर्व सन् 326 में नवम्बर महीने में वह तक्षशिला में आकर ठहरा। उसे मालूम हुआ कि जैन साधु यहाँ ठहरे हुये हैं। उसने अपने एक चतुर दूत को बुलाकर निर्देश दिया कि एक जैन साधु को आदर सहित मेरे पास लेकर आओ।

वह दूत साधु संघ में पहुँचा। उसने श्रमण साधुसंघ के आचार्य दौलामस से कहा कि आचार्य महाराज! आपको बधाई है। शक्तिमान देवता, परमेश्वर के पुत्र सिकन्दर ने आपको बुलाया है। यदि आप चलेंगे तो तो आपको बहुत पुरस्कार मिलेगा। यदि आप निमंत्रण स्वीकार नहीं करेंगे तो सम्राट आपका सिर काट लेगा।

आचार्य ने मन्द मुस्कान के साथ शांत भाव से उत्तर दिया - ईश्वर किसी की हानि नहीं करता, सिकन्दर देवता नहीं है क्योंकि उसकी भी एक दिन अवश्य मृत्यु होगी। वह जो पुरस्कार देना चाहते हैं वे मेरे कुछ काम के नहीं। यदि मेरे पास धन-वैभव होता तो मैं अशांति में जीवन जीता। हम न स्वर्ण चाहते हैं और न मृत्यु से डरते हैं। इसलिये जाओ और सिकन्दर से कह देना कि दौलामस को कुछ नहीं चाहिये यदि सिकन्दर को कुछ चाहिये तो वह हमारे समान बन जावे।

सिकन्दर के दूत ने आचार्य की सारी बातें शांत भाव से सुनीं और सिकन्दर को जाकर सुना दीं। आचार्य का निर्भीक उत्तर सुनकर सिकन्दर को मुनि दर्शन की इच्छा और प्रबल हो

गई। उसने सोचा कि सारी दुनिया पर विजय प्राप्त करने वाला सिकन्दर आज एक नग्न साधु के सामने हार गया। सिकन्दर और आचार्य दौलामस की कभी भेंट नहीं हुई।

बाद में सिकन्दर ने सोचा कि यदि ये जैन साधु हमारे यूनान देश चलें तो वहाँ भी धर्म का प्रचार होगा। उसने कल्याण नामक (कालनस) मुनि से अत्यंत विनयभाव से प्रार्थना की। कल्याणमुनि आचार्य दौलामस के एक मात्र शिष्य साधु थे। सिकन्दर की प्रार्थना सुनकर कल्याणमुनि ने यूनान चलने की स्वीकृति दे दी। सिकन्दर के तक्षशिला से लौटते समय कल्याणमुनि ने विहार करते हुये यूनान चले गये। यूनान जाते समय बाबलिन नामक स्थान पर 32 वर्ष 8 माह की आयु में महान विजेता सिकन्दर की मृत्यु हो गई। कल्याण मुनि ने सिकन्दर की मृत्यु की भविष्यवाणी पहले ही कर दी थी। सिकन्दर ने अंतिम समय कल्याण मुनि के दर्शन किये ओर मुनि ने उसे उपदेश दिया। सिकन्दर ने अपनी अंतिम इच्छा प्रगट की – मेरे मरने के बाद संसार को शिक्षा देने के लिये मेरे खाली हाथ अर्थी से बाहर खुले रखें जायें और मेरी शवयात्रा के साथ अनेक देशों से लूटी हुई सम्पत्ति श्मशान तक साथ ले जाई जाये जिससे जनता ये अनुभव करे कि मरने के बाद आतमा के साथ कोई सांसारिक पदार्थ नहीं जाता। सिकन्दर की शवयात्रा पर एक कवि ने छन्द लिखा –

सिकन्दर शहनशाह जाता, सभी हीला वहाली थे।
सभी थी संग में दौलत, मगर दो हाथ खाली थे।।

कल्याण मुनि ने अपनी आयु के अंत में समाधिमरण पूर्वक देह का त्याग किया। उनके शव को बड़े सन्मान के साथ जलाया गया। कल्याण मुनि के चरण चिन्ह आज भी एथेन्स नगर में एक प्रसिद्ध स्थान पर अंकित हैं।

वह स्थान कौनसा है -

1. वह स्थान कौनसा है जहाँ से सुप्रतिष्ठित केवली मोक्ष पधारे ?
उत्तर - गोपाचल पर्वत।
2. वह स्थान कौनसा है जहाँ आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने मुनि दीक्षा ली थी ?
उत्तर - कांची।
3. वह स्थान कौनसा है जो अतिशय क्षेत्र भी है और सिद्ध क्षेत्र भी ?
उत्तर - कुण्डलपुर जि. दमोह म.प्र.
4. वह स्थान कौनसा है जहाँ आचार्य भद्रबाहु स्वामी की समाधि हुई थी ?
उत्तर - उज्जैन।
5. वह स्थान कौनसा है जहाँ जल का रंग दूध के समान सफेद है?
उत्तर - क्षीर सागर।
6. वह स्थान कौनसा है जहाँ धर्मद्रव्य नहीं होता ?
उत्तर - अलोकाकाश।
7. वह स्थान कौनसा है जहाँ आचार्य नेमिचंद्रजी ने द्रव्य संग्रह ग्रंथ की रचना की ?
उत्तर - केशवराय पाटन।
8. वह स्थान कौनसा है जहाँ भगवान पार्श्वनाथ के समय का स्तूप बना है ?
उत्तर - मथुरा।
9. वह स्थान कौनसा है जहाँ दीवान अमरचंदजी ने शेर को जलेबी खिलाई थी ?
उत्तर - जयपुर।
10. वह स्थान कौनसा है जहाँ चन्दनबाला ने मुनि महावीर का आहार के लिये पड़गाहन किया था ?
उत्तर - कौशाम्बी।
11. वह स्थान कौनसा है जहाँ चन्द्रप्रभु भगवान का समवशरण 15 बार आया ?
उत्तर - सोनागिर।
12. वह स्थान कौनसा है जहाँ पूंछ वाले मनुष्य होते हैं ?
उत्तर - कुभोग भूमि।
13. वह स्थान कौनसा है जहाँ जैन धर्म के अतिरिक्त कोई धर्म नहीं होता ?
उत्तर - विदेह क्षेत्र।
14. वह स्थान कौनसा है जहाँ भगवान महावीर स्वामी का समवशरण 16 बार आया?
उत्तर - विपुलाचल पर्वत, राजगृही।
15. वह स्थान कौनसा है जहाँ काल का परिवर्तन नहीं होता ?
उत्तर - विदेह क्षेत्र।

छोटी मगर काम की 13 बातें

प्रमाद अथवा अज्ञान के कारण हम छोटी-छोटी क्रियाओं में असावधानी करते हैं। इससे जीव हिंसा के साथ ही स्वास्थ्य के लिये ही हानिकारक सिद्ध होती हैं। हमारा भोजन भी अनजाने में अभक्ष्य बन जाता है। ध्यान रखें और जीव हिंसा से बचें-

1. भोजन बनाते समय हाथ धोकर और साफ कपड़े से हाथ पोंछकर ही आटे के डिब्बे में हाथ डालें।
2. भोजन करते समय जूठे हाथों से भोजन सामग्री न लें।
3. भोजन करते समय थाली की सामग्री को वापस उसी बर्तन में न डालें जिससे आपने सामग्री ली है।
4. पानी की बोटल, जग अथवा गिलास से ऊपर से पानी पीने पर भी वह पानी जूठा हो जाता है। अतः पानी स्वयं के लिये गिलास में पानी लेकर ही पियें।
5. जब किसी खाने-पीने की सामग्री को निकालने के लिये ढक्कन अथवा प्लेट उठायें तो उसे उल्टा करके रखें जिससे गंदगी सामग्री में न जाये।
6. जूठे बर्तन धोने के लिये रखने के बाद हाथ अवश्य धोयें।
7. रसोईघर में काम करते समय हाथ अथवा बर्तन पोंछने के लिये धुले हुये वस्त्र अलग से रखें। अपने पहने हुये वस्त्रों से साफ न करें।
8. रसोई बनाते समय यदि पसीना पोंछना, खुजली आदि कार्य करने के बाद हाथ अवश्य धोयें।
9. गर्म पानी को ठंडा करने के बाद ही फेकें। इससे आप भयंकर जीव हिंसा से बच जायेंगे।
10. कोई गर्म वस्तु का बर्तन जमीन पर न रखकर स्टेण्ड पर ही रखें।
11. किचन में प्लेटफार्म पर सफेद पत्थर ही लगवायें जिससे छोटे-छोटे जीव आसानी से दिखाई देते हैं।
12. प्रातः रसोई का कार्य करने के पहले गैस को सूखे कपड़े से हल्के हाथों से साफ कर लें।
13. भोजन और सफाई का काम समाप्त होने के बाद पानी छानने के छन्ने धोकर सूखने के लिये अवश्य डाल दें।

नरेन्द्र कुमार जैन, जबलपुर

दीप - मैं कुछ समझा नहीं अंकल !

उत्सव - अरे तुमने अपने पापा से पटाखे लाने की जिद की थी और तुमने कल शाम से भोजन भी नहीं किया।

दीप - हाँ लेकिन मैं दीपावली पर एन्जॉय करना चाहता हूँ। मेरे दोस्त ढेर सारे पटाखे लाये हैं।

उत्सव - किसी की हत्या करके आनंद लेना चाहते हो। तुम्हारे थोड़े से आनंद के लिये जलाये गये पटाखों की आग और आवाज असंख्यात जीवों की मौत बनकर आयेगी और क्या यदि तुम्हारे दोस्त चोरी करेंगे तो तुम भी चोरी करोगे ?

दीप - नहीं अंकल, लेकिन दीपावली का पर्व तो हमारे भगवान का निर्वाण महोत्सव है तो क्या हम खुशियाँ न मनायें ?

उत्सव - मैंने कम मना किया। दीवाली मनाओ लेकिन दूसरे तरीके से। जैसे गौतम गणधर ने दीपावली मनाई थी। मतलब हम इस दिन भगवान महीवर की पूजन करें, उनकी शिक्षाओं का अध्ययन करें। तुम्हारा नाम तो दीप है। ऐसा कार्य करो जिससे लोगों को प्रकाश मिले अंधेरा नहीं। तुम्हारा पटाखों का आनंद अनंत निर्दोष जीवों का मौत का कारण क्यों बने ? अच्छा यह बताओं कि पटाखे फोड़ने से कौन सा लाभ है ?

दीप - (कुछ देर सोचकर) कुछ भी नहीं।

उत्सव - जब जिस कार्य में लाभ ही नहीं तो ऐसा कार्य क्यो करना और जिस काम में हानि ही हानि हो वह काम तो कभी नहीं करना। पटाखों से लोग जल जाते हैं, घरों में आग लग जाती है,बच्चे - बड़े अपंग हो जाते है और ..... अरबों रुपयों की सामग्री जलकर राख बन जाती है।

दीप - बस बस अंकल मैं समझ गया। अब मैं पटाखें कभी नहीं फोड़ूँगा।

उत्सव - वाह ये हुई न बात। हम ज्ञान की दीपावली मनायेंगे।

- विराग शास्त्री

अब नहीं फोड़ूँगा

उत्सव - अरे सम्यक् भाई ! सुबह - सुबह कहाँ चल दिये ?

सम्यक् - क्या बताऊँ उत्सव ! मेरा बेटा दीप कल से बाजार से पटाखा लाने के लिये जिद कर रहा है। कल शाम से उसने भोजन भी नहीं किया ।

उत्सव - अरे यह क्या बात हुई सम्यक् ! तुमने समझाया नहीं .....

सम्यक् - (बीच में टोककर) अरे यार ! कितना समझाया लेकिन मानता ही नहीं।

उत्सव - तो फिर तुमने क्या सोचा ? तुम इतने समझदार होकर भी उसे पटाखे लाकर दोगे ?

सम्यक् - तो फिर क्या करूँ ? मन तो नहीं मानता लेकिन सम्यक् भोजन ही नहीं कर रहा।

उत्सव - आजकल के बच्चे तो बस ! इनकी सारी इच्छाएँ पूरी करो और जब बड़े हो जायेंगे तो कहेंगे आपने हमारे लिये क्या किया? तुम रुको मैं समझाकर देखता हूँ।

उत्सव - (घर पहुँचकर) दीप क्या कर रहे हो ?

दीप - बस अंकल बोर हो रहा हूँ। आइये न अंकल ! बैठिये।

उत्सव - तो चलो आज आपको मैं तुम्हें एक जादू दिखाता हूँ।

दीप - कैसा जादू अंकल ?

उत्सव - बेटा में जलती हुई मोमबत्ती के ऊपर तुम्हारा हाथ रखूँगा और तुम्हारा हाथ जलेगा नहीं।

दीप - ऐसे कैसे हो सकता है अंकल ? मैं अपना हाथ मोमबत्ती पर नहीं रखूँगा।

उत्सव - क्यों बेटा ?

दीप - मैं जल जाऊँगा।

उत्सव - वाह बेटा तुम्हें अपने जलने का तो डर है परंतु उन छोटे-छोटो जीवों को जलाकर मार डालना चाहते हो ?

FRENCH POEM

Le Ciel

Chant le louange de tempe',
Je Ne Pneu jamais.
Le place de paix,
Ou' un ne pouvoir pas de retirer.

Arbustle briller saison de printemps,
Frais gai reyaume de roi.
Mon Coeur parler le mot de il,
Mon te ^ te salut dans honneur de il.

Oh Grand dieu bon donner votre pied,
Be'nir soigner ce ciel con heureux.

ENGLISH TRANSLATION

The Heaven

Singing the praise of Temple,
Never I tire.
The place of peace,
Where one can't retire.

Shrubbery Shiny Season of Springs,
Gaiety Gaily Kingdom of Kings.
My Heart speaks the word of it,
My head bows in honour of it.

Oh Great God! Please give your feet,
To bless to nurse this heaven with bliss.

- Gyayak Abhay Kumar Jain, Devlali.

1 मुझको समझे बच्चे जेल, मगर जेल में खेलें खेल।
मेरे पास जो भी आ जाता, अपनी जीवन धन्य बनाता।

2 हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई, बड़े मजे से हर कोई खाये।
हजम न होती कभी पेट में हर खाने वाला पछताये।।

3 जब तक मन में रहती हूँ, तन को दुबला करती हूँ।

4 जो सबको सन्मार्ग दिखाता, कोई उसे पर छू न पाता।

5 चाहे कितनी पूरी कर लो, कभी न पूरी होती है।
एक पूरी दूजी फिर से तैयार खड़ी ही रहती है।।

6 सबको देख रहे हैं पल-पल, उन्हें देखना सबको मुश्किल।।

7 सुख में ध्याओ, दुःख में ध्याओ, ध्याते ही निज सुख पाओ।

8 एक महान नारी का काम, जग में गूंज रहा है नाम।
पति को जिनधर्म में लाया, जिनमुनि का उपसर्ग मिटाया।

9 जिन धर्म की हो प्रभावना, जीवन का उद्देश्य महान।
ग्रंथ लिखा और प्राण गंवाये, ऊँचा रखा धर्म का नाम।।

ज्ञान पहेली के उत्तर पत्रिका में ही दिये गये है ।

नकली चीजों का

कारोबार

देश में आज नकली चीजों का कारोबार बढ़ता जा रहा है। धन के लोभ ने मिलावट करने वालों को अंधा बना दिया है। देश के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जब कानपुर दौरे पर गये तो उनके लिये बनने वाले भोजन में जहरीले रसायनों की मिलावट थी। सब्जियों और फलों में इंजेक्शन लगाये जा रहे हैं, केले को कार्बाइड से पकाया जा रहा है, सूखे मेवों को गंधक वाले कमरे में बंद करके रखा जाता है, मसालों में सूखा गोबर, घोड़े की लीद, पीसी हुई ईट मिलाई जा रही है, यूरिया खाद से दूध बन रहा है। और देखिये लोभियों की करतूतें –

नकली घी - जयपुर में एक नकली घी की फैक्ट्री पकड़ी गई। यहाँ दूसरी कपंनी के एक्सपायरी डेट वाले घी को बड़ी कंपनियों के पैकेट में बंद किया जा रहा था। यहाँ 49000 किलो घी पकड़ा गया।

नकली सॉस - जिस सास को आप मजे से खा रहे हैं वह कहीं आपके लिये नुकसानदायक तो नहीं। जयपुर में नकली सॉस बनाने वाली फैक्ट्री पकड़ी गई। यहाँ सड़े हुये कद्दू, सड़ी लौकी, केमिकल और पोस्टर कलर से नकली सॉस बनाया जा रहा था और बिना टमाटर के टमाटो सॉस बन रहा था।

लखनऊ में नकली सॉस बनाने वाली एक फैक्ट्री में 6 लोग मर गये। यहाँ एक मकान के नीचे गुप्त रूप से एक विशाल टैंक बनाया गया था। इसमें पपीते को गूदे को सड़ाने के लिये भरा गया था, जो कि सड़ गया था। फैक्ट्री में काम करने वाले 6 मजदूर पपीते को गूदे को निकालने गये तो उसकी बदबू से उन्हें सांस लेने में तकलीफ होने लगी और वे वहीं गिर गये और उस टैंक में डूबकर मर गये।

नकली कत्था - कहीं आपके औंठ करने वाले पान में जहर तो नहीं। वाराणसी में नकली कत्था बनाते हुये कुछ लोगों को पकड़ा गया है। उन्होंने बताया कि वे प्रतिबंधित केमिकल से नकली कत्था बनाते थे। यह देखने में असली लगता है। यह कत्था अत्यंत हानिकारक है। इन लोगों से 2 करोड़ 50 लाख का नकली कत्था पकड़ा गया।

नकली कास्मेटिक - आप अपने को सुंदर बनाये रखने के लिये जो कास्मेटिक प्रयोग कर रहे हैं वह कहीं आपकी सुन्दरता न छीन ले। मेरठ में नकली कास्मेटिक बनाते हुये पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया है। ये नकली क्रीम और शैम्पू बनाते थे और बड़ी कम्पनियों के पाऊच बनवाकर उसमें पैक करके बाजार में बेचते थे। इनके पास बड़ी कम्पनियों के सैंकड़ों ट्यूब और पाऊच पाये गये।

फरीदाबाद में इसी तरह के एक सेन्टर को पकड़ा गया। हिन्दुस्तान यूनिलीवर के प्रतिनिधि श्री आरिफ अली की शिकायत पर नकली कास्मेटिक बनाने वालों को पकड़ा गया। यह कार्यवाही ड्रग कंट्रोलर श्री एम पी गुप्ता के निर्देशन में की गई।

मुम्बई में भी एक स्थान से 1 करोड़ का नकली कास्मेटिक जब्त किया गया। इन्हें बड़ी कम्पनियों के पैकेट में पैक किया गया था।

नकली सरसों तेल - कानपुर में 40000 लीटर नकली सरसों का तेल पकड़ा गया।

दिनांक 30 जुलाई को आगरा में इंजोपोन के 40,000 इंजेक्शन पकड़े गये। रामगंज मण्डी उ.प्र. में 15000 केमिकल वाले केले पकड़े गये। इनमें इथाइलीन नाम का केमिकल डाला गया था। इस केमिकल के सेवन से आंख खराब होने का खतरा होता है।

दूध में भी मिलावट - लखनऊ में एक दूध की डेयरी में छापा मारकर दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। यहाँ दूध में फार्मेलिन नाम का केमिकल मिलाया जाता था। फार्मेलिन नाम का केमिकल शवों को मुर्दो का लगाया जाता है। इसके लगाने से शव कई दिनों तक खराब नहीं होता। दूध में फार्मेलिन मिलाने से यह 48 घंटे तक खराब नहीं होता। फार्मेलिन के सेवन से आंते खराब होने का खतरा रहता है। ये लोग कास्टिक सोडा और यूरिया भी मिलाते थे। जुलाई माह में चंडीगढ़, जयपुर, नोएडा, अंधेरी, बांद्रा, दिल्ली आदि शहरों में दूध के 500 सेम्पल की जांच की गई। इनमें से अधिकांश दूध अशुद्ध पाये गये।

दूध सफेद और ताजा दिखे तो इसलिये कपड़े धोने वाला पाऊडर मिलाते हैं।

क्या करें - 1. दूध किसी विश्वासपात्र दूध वाले से ही लें।

- आज तक, जी न्यूज, इंडिया टीवी और प्रिन्ट मीडिया से संकलित
- जुलाई माह 2010

सिगड़ी नहीं मोक्ष की पगड़ी

तीर्थंकर नेमिनाथ का आगमन द्वारिका में हुआ। उनकी वाणी सुनने नगर की जनता की भीड़ समवशरण में एकत्रित हो गई। उसमें गजकुमार नामक का युवक भी था। भगवान की वाणी में आत्मा का वैभव और संसार की असारता सुनकर उसे वैराग्य हो गया। उसने मुनि दीक्षा ले ली।

सोमिल ने अपने दामाद गजकुमार को मुनि अवस्था में घोर जंगल के बीच तपस्या करते देखा। दामाद को देखकर सोमिल को अपनी पुत्री का मासूम चेहरा दिखाई देने लगा। उसे लगा कि मैंने कितने सपने देखे और अपनी कोमलसी पुत्री का विवाह इस गजकुमार से किया। पर इसने युवा अवस्था में उसे त्यागकर उसे अकेला छोड़ दिया। इसने मेरी पुत्री के साथ अन्याय किया है। यदि इसे मुनि बनना था तो इसने मेरी पुत्री से विवाह ही क्यों किया ? कम से कम मेरी पुत्री का जीवन तो बरबाद नहीं होता। सोमिल क्रोध से लाल हो गया। उसके मन में बदला लेने का भयंकर परिणाम आ गया और सोचने लगा - मेरी पुत्री का जीवन खराब कर यहाँ तपस्या करने का नाटक कर रहा है। क्रोध में आकर सोमिल सेठ गजकुमार मुनि के पास पहुँचा। उसने गजकुमार के सिर पर मिट्टी का घेरा बनाया और उसमें जलते हुये अंगारे डालने लगा। अंगारों से गजकुमार का सिर जलने लगा। लेकिन गजकुमार तो आत्मस्वभाव का आनंद ले रहे थे। सिर पर अंगारे की गर्मी और अंदर में चैतन्य के अतीन्द्रिय आंनद का सुख। वे अपने स्वरूप में लीन रहे। उन्होंने सोमिल पर क्रोध व्यक्त नहीं किया और अंदर विचार किया यह ससुर द्वारा सिर पर बांधी गई सिगड़ी नहीं मोक्ष की पगड़ी है।

लौकी का रस पीने से मृत्यु

क्या कभी आपने सुना है कि लौकी का रस पीने से भी किसी की मौत हो सकती है? पर ऐसा हुआ है देश की राजधानी दिल्ली में। आश्चर्य लग रहा है ना पर यह है सच।

दिनांक 12 जुलाई को CSIR के 65 वर्षीय वैज्ञानिक श्री सुशील सक्सेना की लौकी का रस पीने से मौत हो गई। ऐसा हुआ जहर भरी लौकी के रस पीने से। श्री सुशील सक्सेना को डायबिटीज की बीमारी थी। वे पिछले चार साल से प्रतिदिन लौकी का जूस पी रहे थे। सदा की भांति उनकी पत्नी ने उन्हें करेले और लौकी का रस पीने को दिया। पत्नी ने भी थोड़ा रस पिया। रस पीते ही सुशीलजी का हालत बिगड़ने लगी और उन्हें तुरंत हास्पिटल ले जाया गया। वहाँ उनके फेफडों ने काम करना बंद कर दिया और उनकी मृत्यु हो गई और पत्नी की हालत गंभीर हो गई। डॉक्टर ने जांच कर बताया कि जिस लौकी का रस वैज्ञानिक ने पिया था उसमें आक्टासिन की अधिक मात्रा थी।

ऑक्टासिन क्या है - ऑक्टासिन एक प्रकार का पदार्थ है जो प्रत्येक फल और सब्जी में पाया जाता है। ऑक्टासिन के कारण ही फल और सब्जियों का आकार बढ़ता है। इसकी अधिक मात्रा जहर का कार्य करती है। ऑक्टासिन की अधिक मात्रा से पाचन तंत्र पर बुरा असर पड़ता है, लीवर में सूजन, लीवर-किडनी पर असर जैसी समस्यायें पैदा होती हैं।

मिलावट ने ली जान - आजकल जल्दी कमाई के चक्कर में सब्जी उगाने वाले रात्रि में आक्टासिन का इंजेक्शन सब्जी और फल में लगाते हैं और कुछ ही घंटों में वह बड़े हो जाते हैं। जिससे समय से चार दिन पहले ही सब्जी–फल बिकने के लिये तैयार हो जाते हैं। ऑक्टासिन की अधिक मात्रा जहर का कार्य करती है। आक्टासिन का इंजेक्शन सरकार द्वारा प्रतिबंधित है फिर भी यह अधिकांश मेडीकल स्टोर में आसानी से मात्र 3 रू. में मिल जाता है। सब्जियों–फल में आक्टासिन लगाने के बाद उसमें कुछ कड़वाहट आ जाती है। इसी जहर ने वैज्ञानिक की जान ले ली।

क्या करें -

1. जब भी आज कोई सब्जी–फल खायें पहले उसका थोड़ा सा टुकड़ा चखकर देख लें कड़वा होने पर बिल्कुल न खायें।
2. बाजार से कोई भी सब्जी–फल लायें सबसे पहले उसे नमक मिले पानी से धों लें।

   सावधानी ही बचाव है।
3. मिलावटी सब्जी–फल का रंग ज्यादा तेज होता है इनसे बचें।

सुवाक्य

दूसरों के दोष देखने से अच्छा अंधा हो जाना अच्छा है।

जिन्दगी एक गणित है। इसमें दोस्तों को जोड़िये, दुश्मनों को घटाईये, विश्वास का गुणा कीजिये, राग–द्वेष का भाग कीजिये तो जिन्दगी पूर्णांक बन जायेगी।

सोनगढ़ के छात्रावास का उद्घाटन

पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि स्वर्णपुरी सोनगढ़ में श्रुत पंचमी के पावन प्रसंग पर श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह का भव्य उद्घाटन संपन्न हुआ। दिनांक 16 जून को आयोजित इस कार्यक्रम में प्रातः जिनेन्द्र पूजन का आयोजन किया गया। इसके पश्चात् गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के माध्यम से सभा का मंगलमय शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात् गुरुदेवश्री और बेनश्री के मांगलिक और ब्र. अभिनंदन कुमारजी के मंगलाचरण से सभा का विधिवत् प्रारंभ हुआ। इसके पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री के स्वरों में संकलित गाथाओं की सी.डी. और उनकी पुस्तक "कुन्द सूत्र - कहान स्वर" का विमोचन किया गया। श्री अनंतराय ए.सेठ और श्री निमेषभाई एस. शाह परिवार ने उपस्थित साधर्मियों को "कुन्दसूत्र कहान स्वर" भेंट स्वरूप प्रदान की।

पं. देवेन्द्रजी बिजौलिया ने विद्यार्थी गृह की स्थापना के उद्देश्यों पर अपना उद्बोधन दिया। श्री शांतिलाल रतिलाल परिवार स्थापित श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट की ओर से श्री अनंतराय ए. सेठ ने अपनी भावनायें व्यक्त कीं। विद्यार्थी गृह के उद्घाटन की औपचारिक विधि श्री हीरालालजी काला के कर कमलों से संपन्न हुई। इस अवसर पर विद्यार्थी गृह के प्रथम सत्र के 20 विद्यार्थियों ने श्री विराग शास्त्री के मार्गदर्शन में मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं।

इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से आये विद्वानों, ब्रह्मचारिणी बहनों और साधर्मियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का संचालन विद्यार्थी गृह की प्राचार्या श्रीमति कामना जैन ने किया।

जन्हें मुन्हे ज्ञायक हम का विमोचन

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर द्वारा बाल वर्ग के लिये धार्मिक बाल कविताओं की रंगीन पुस्तक और उन्हीं कविताओं की एनीमेशन वीडियो सी.डी. का निर्माण किया गया है। इन कविताओं की रचना एवं वीडियो निर्देशन श्री विराग शास्त्री (जबलपुर), जबलपुर द्वारा किया गया है।

धार्मिक गेम मुक्ति सोपान को विमोचन

दूसरी प्रस्तुति के रूप में आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर द्वारा एक रोचक गेम तैयार किया गया है। इस गेम जैन धर्म के शब्दों का सामान्य ज्ञान और भावों का फल बतलाने वाली धार्मिक सांप-सीढ़ी और चरणानुयोग प्रधान एक खेल प्रकाशित किया गया है। साथ में खेलने के लिये डाइस और गोटी भी दी जा रही हैं।

इन दोनों नवीन प्रस्तुतियों का विमोचन देवलाली में आयोजित शिक्षण प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर डॉ.हुकमचंद भारिल्ल द्वारा किया गया। उपस्थित साधर्मियों ने कविताओं की पुस्तक, सी.डी., और गेम देखकर इस कार्य की प्रसन्न हृदय से सराहना की।

इस अंक में प्रकाशित ज्ञान पहेली के उत्तर

1. पाठशाला 2. कसम
3. चिन्ता 4. ज्ञान 5. इच्छा।
6. सिद्ध भगवान 7. ज्ञायक स्वभावी आत्मा।
8. चेलना रानी 9. पं. टोडरमलजी

चहकती चेतना अब सी.डी. में उपलब्ध/ साथ ही पुराने अंक भी उपलब्ध

चहकती चेतना प्रत्येक वर्ग के अनुसार उसकी सुविधा के अनुसार प्राप्त हो सके इस भावना से चहकती चेतना का सी.डी. प्रारूप तैयार किया गया है। इसके अंतर्गत अब आप चहकती चेतना के सी.डी.के सदस्य बन सकते हैं। इसे कम्प्यूटर अथवा टीवी पर पढ़ा जा सकता है। सदस्यता शुल्क 300 रु. (तीन वर्ष हेतु) निर्धारित है। चहकती चेतना के पुराने सभी अंक एक डीवीडी में उपलब्ध हैं। इसका मूल्य 100 रू. (पोस्टेज व्यय सहित) है। साथ ही चहकती चेतना के कुछ पुराने अंक उपलब्ध हैं। इसकी राशि प्रति अंक 20 रूपये निर्धारित है। जो साधर्मी चहकती चेतना सी.डी. प्रारूप में चाहते हैं और जिन साधर्मियों को पुराने अंक चाहिये वे पत्र/फोन/ईमेल द्वारा संपर्क कर सकते हैं।

सम्माननीय, आपने जिनागम की प्रभावना में जो योगदान दिया है वह स्तुत्य है। धार्मिक गेम और बाल कविताओं की वीडियो सी.डी. और पुस्तक से खेल-खेल में जिनागम बोध प्राप्त कराने की कलाकारी प्रज्ञा वंदनीय है। यह अकलंक-निकलंक जैसे जिनागम पर न्यौछावर महान बालकों जैसा साहसी रूचिवंत लोगों का कार्य है।

विनोद मोदी, दलपतपुर जि. सागर म.प्र.

दुःखद प्रसंग

रतलाम निवासी श्रीमति पुष्पा कांतिलाल बड़जात्या का दिनांक 30 मई का स्वर्गवास हो गया। पुष्पाजी ने कई धार्मिक भजन लिखे तथा सामाजिक रूप से सक्रिय और अध्यात्मप्रेमी महिला थीं। इस दुःखद प्रसंग पर परिवार की ओर से 500/-रू. राशि प्राप्त हुई। श्रीमति पुष्पाजी के शीघ्र अविचल गति की प्राप्ति की कामना।

सहयोग प्राप्त

500/- रू. - आगरा निवासी चि.अंकुर जैन और सौ. आकांक्षा जैन के शुभ विवाह के प्रसंग पर श्री अवनीन्द्रशरणजी की ओर से प्राप्त। धर्ममय जीवन की मंगल कामना।

समाचार

जयपुर के छात्रों ने छेड़ा शाकाहार आंदोलन

एक ओर जहाँ आज का युवा व्यसनों और भौतिकवाद में लिप्त है अथवा अपने कैरियर के सामने उसे अन्य किसी भी समस्या का कोई महत्व नहीं लगता वहीं दूसरी ओर जयपुर महानगर के युवाओं ने मांसाहार के विरोध में एक अभियान का प्रारंभ किया। महात्मा गांधी के द्वारा 9 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन का शुभारंभ हुआ था। इसी दिन युवाओं के गैर सरकारी संगठन "पीपुल्स फॉर एनीमल्स लिब्रेरशन (PAL)" के द्वारा 'शाकाहार दिवस' प्रतिवर्ष मनाने का संकल्प किया गया। इस वर्ष 9 अगस्त को जयपुर के प्रसिद्ध गांधी चौक पर साढ़े सात फुट का मुर्गे के पुतले को दिखाया गया। जो शाकाहार का संदेश दे रहा था। इस पहल को प्रमुख चैनलों और अखबारों ने प्रसारित को किया। यह संस्था मूक पशु पक्षियों के हित में कार्य कर रही है। गत वर्ष इसी दिन रवीन्द्र मंच पर संकल्प नामक नाटिका की गई थी। जिसमें जयपुर के प्रमुख अतिथियों ने और समाज ने पधारकर इस कार्य की मुक्त कंठ से सराहना की थी।

– सर्वज्ञ भारिल्ल

मुम्बई में खुलने वाले कत्लखाने का विरोध करें

बी.एम.सी. अर्थात् मुम्बई महानगर पालिका ने एशिया का विशाल कत्लखाना खोलने का निर्णय किया है। जिसमें आधुनिक मशीनों से 14000 पशु प्रतिदिन काटे जा सकेंगे। इसके लिये 125 करोड़ रू. का बजट निर्धारित किया गया है। इसका 75 प्रतिशत मांस निर्यात किया जायेगा। इसमें हजारों लीटर पानी प्रतिदिन प्रयोग किया जायेगा। इसे घृणित कार्य का विरोध करने के लिये एक अभियान चलाया जा रहा है। आप भी इस भयानक कार्य का विरोध करने के लिये इंटरनेट की बेबसाइट www.jivdaya.net पर विरोध करें।

पाकिस्तान में जैन मंदिरों के अवशेष

पाकिस्तान में जैन मंदिरों के अवशेष

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

प्रश्न–1. आरारोट भक्ष्य है कि अभक्ष्य ?

– जिनेन्द्र कुमार जैन, ग्वालियर

उत्तर– यह शकरकंद आदि अभक्ष्य चीजों से बनाया जाता है तथा बहुत दिनों तक रखा होने से अभक्ष्य ही है।

प्रश्न– 2. शरीर की रक्षा करना भी धर्म साधन के लिये आवश्यक है तो फिर मच्छर से बचने के क्या उपाय किये जायें ?

– अरूण जैन, दिल्ली

उत्तर – जिससे जीव हिंसा न हो और शरीर की भी रक्षा हो ऐसे उपाय करना चाहिये। मच्छरदानी का उपयोग करें। मच्छरों को मारने वाला धर्मसाधन कैसे कर सकता है ?

प्रश्न–3. सुदर्शन मेरू पर कौनसे मनुष्य जा सकते हैं ?

– महेन्द्रकुमार जैन, उदयपुर

उत्तर – सुदर्शन मेरू पर विद्याधर और चारण ऋद्धिधारी मुनि जा सकते हैं और जाते भी हैं।

प्रश्न–4. घर के किसी सदस्य के मरण हो जाने पर सिर मुंडाते हैं। कितनी पीढ़ी तक के सदस्यों को बाल मुंडाना चाहिये ?

– सुरेन्द्र सौगानी

उत्तर– सिर मुंडवाना जैन धर्म की प्रथा नहीं है यह वैष्णव धर्म की प्रथा है।

प्रश्न–5. मुनि अवस्था में तीर्थंकर पार्श्वनाथ को कोई स्त्री या देवी छू सकती है ?

उत्तर – शास्त्रों में मुनिराज को महिलाओं को सात हाथ दूर रहने की आज्ञा है तो तीर्थंकर को कोई देवी या स्त्री के छूने की बात ही नहीं है।

प्रश्न–6. क्या तीर्थंकर से बड़ा पुण्य देवी का हो सकता है ?

उत्तर– तीर्थंकर परमात्मा जन्म से ही अतुल बल के धारी होते हैं। अतुल बल का अर्थ जिस बल के आगे चकवर्ती और इन्द्र जैसे महाबली भी हार जायें।

प्रश्न–8. क्या देवी–देवता किसी का भाग्य बदल सकते हैं ?

उत्तर – कोई किसी के भाग्य को कैसे बदल सकता है ? सब अपनी–अपनी करनी का फल पाते हैं।

SMS

We Proud to b a part of Jain Community :

(1) Contributes 24% of Total Income Tax of India.
(2) 62% of Total Charity fund.
(3) Runs 12000 out of 16000 Gaushala.
(4) More than 50 thousands Temples in India with max Tirthdham.
(5) 46% Shares Brokers are Jains.
(6) Most of leding News Papers owners are Jains.

Please Don"t Drink "NIMBOOZ" Bcoz aNew Virus
H.B.F.(High Bone Fever) Is Spreading From It.

From AIIMS, Delhi (Sweta Jain, Katni (M.P.))

Le Lo Jinvani Ka Injection. Nahi Hoga Karmo Ka Reaction. LeLo Gurudev Ka Saggetion.Mil Jayega Moksha Ka Reservation.

- Jeevandhar Singatkar

1. Some time we struggle a tasteless coffee till the last sip, then we find sugar lying at the bottom... THATS LIFE. Sweetened but not stirred well.
2. 90% Problems of life are due to.... Tone of voice...!! It is not so important what to we say.....But it matters a lot How we say it....
3 Whan " TIME" never stops for us, Than why do we always wait for the Right time ? No "TIME" is wrong to do the Right Things...
4. "If you want to shine like sun , first you will have to Burn like it."
5. Life is "X+X+X" Yesterday is Xperience. Today is Xperiment. Tommorow is Xpection. So use ur Xperience in ur Xperiment To achieve ur Xpectation.

From - Naveen Jain Shastri (Jaipur)

आपके ब्रश से

PENTING PENTING

PENTING PENTING

रिया राजेन्द्र कुमार जैन
बड़ा मलहरा जि. छतरपुर (म.प्र.)

अनु अरुण जैन
दलपतपुर, जि. सागर (म.प्र.)

सौरभ मुन्नालाल जैन
बड़ा मलहरा जि. छतरपुर (म.प्र.)

अंकित अशोक जैन
बड़ा गांव जि. टीकमगढ़ (म.प्र.)

आकाश जैन (म.प्र.)

इससे पूर्व के अंक में आपने पढ़ा कि अंजना की सास केतुमती ने अंजना पर झूठा आरोप लगाकर महल से बार निकाल दिया। अंजना समतापूर्वक अपने कर्म उदय का विचार करने लगी। उसे जंगल में एक दिगम्बर मुनिराज ने धर्म और धैर्य के साथ के रहने का उपदेश दिया। अब आगे...

भाग्य

अंजना ने तेजस्वी बालक को जन्म दिया हनरूद्वीप का राजा प्रतिसूर्य इन्हे अपने नगर ले गया। बेटी की तरह रखा। बालक का नाम रखा हनुमान। पवनञ्जय को पता चला और वह भी मिलने आये...

इसी प्रकार बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर भी आप भी क्रोध चांडाल से बच सकते हैं यदि आप सोच लें...

" तैं करम पूरब किये खोटे, सहैं क्यों नहीं जीयरा"

तो हमें स्वयं की भूल का अनुभव होगा
और दूसरे पर क्रोध नहीं आयेगा और समता भाव रहेगा ।

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा प्रायोजित एवं
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन,शाखा – जयपुर महानगर द्वारा आयोजित

सर्वोदय अहिंसा अभियान 2010

यदि आपके मन में निर्दोष जीवों के प्रति करूणा है ?
क्या आपका मन मूक जीवों की हिंसा से कांपता है ?
क्या आप हमारे अहिंसा अभियान में सहभागिता करना चाहेंगे ?
यदि हाँ तो आपका स्वागत है?

विगत 12 वर्षों से दीपावली के अवसर पर पटाखों से होने वाली हिंसा के विरोध में हमारे द्वारा सर्वोदय अहिंसा अभियान चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत पटाखों से होने वाली जीव हिंसा और अन्य हानियों को प्रदर्शित करने वाला एक विशाल पोस्टर प्रकाशित कर इसे देश के विभिन्न स्थानों पर भेजा जाता है। इस अभियान का सार्थक प्रभाव हुआ है। इससे प्रभावित होकर अनेक युवाओं और बच्चों ने पटाखे न फोड़ने का संकल्प लिया है । हमारे अभियान से प्रभावित होकर देश की अन्य संस्थायें भी इस अभियान को अपने स्तर पर संचालित कर रही हैं। इस अभियान को संपूर्ण देश के स्तर पर संचालित किये जाने की योजना है। इस योजना को साकार रूप देने के लिये इस वर्ष हमें श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई का पूर्ण आर्थिक सहयोग मिल रहा है।

आपको क्या करना है?

हमारे द्वारा प्रकाशित होने वाले पोस्टर को हम आपको प्रदान कर रहे हैं। आप इन पोस्टर को मंदिरों, पुस्तकालयों, सार्वजनिक स्थानों पर लगाकर इस पवित्र कार्य की अनुमोदना कर सकते हैं। आपसे निवेदन है कि आप अपनी आवश्यकता अनुसार पोस्टर की संख्या लिखकर भेजें जिससे हम संपूर्ण देश की संस्थाओं से प्राप्त पोस्टर की संख्या के अनुसार उसे अधिक से अधिक संख्या में प्रकाशित कर सकें और समय पर आप तक पहुँचा सकें । तो तुरंत संपर्क कीजिये– जैन युवा फैडरेशन, डी 136, सावित्री पथ, विवेकानंद स्कूल के पास, बापू नगर, जयपुर

संयोजक
संजय शास्त्री जयपुर – 09509232733 विराग शास्त्री – 9373294684

निवेदक – आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि., जबलपुर